॥ श्री ॥

कसायपाहुड

KASAAYAPAAHUDA

आ. गुणधर · २वीं शती · अभिलेख २/९०

श्री लोहाचार्य → **आ. गुणधर**

संक्षिप्त परिचय

आचार्य गुणधर कृत प्राकृत गाथाबद्ध सिद्धान्त-ग्रन्थ, जिसमें क्रोध-मान-माया-लोभ — इन कषायों का अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन है।

षट्खण्डागम के साथ यह दिगम्बर परम्परा की द्वितीय श्रुतधारा माना जाता है; इसी पर वीरसेन-जिनसेन की जयधवला टीका रची गई।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

कसायपाहुड — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक २ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. गुणधर; रचना-काल २वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २९) के अनुसार इनका समय पूर्वपाद है तथा गुरु श्री लोहाचार्य। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "कषाय पाहुड" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम · समयसार · प्रवचनसार · पंचास्तिकाय · नियमसार · अष्टपाहुड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति २ — मूल छायाचित्र

← षट्खण्डागम

समयसार →